सूरदास की भक्ति भावना

'भक्ति' शब्द 'भज् सेवायाम्' धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय लगाकर बनाया गया है, जिसका अर्थ है भगवान का सेवा प्रकार। शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में ईश्वर में परम अनुरक्ति को ही भक्ति माना है — "सा परानुरक्तिरीश्वरे", भक्ति ईश्वर के नारद भक्ति सूत्र के अनुसार 'अमृत स्वरूपा भी' प्रति परम प्रेम रूपा है और अमृत स्वरूपा है। जिसे परम प्रेम रूपा और अमृत हो जाता है, सिद्ध हो जाता है, जिसे भक्ति को पाकर मनुष्य तृप्त हो जाता है, किसी वस्तु की न इच्छा करता है और न शोक करता है और न द्वेष करता है, न विषयों में आसक्त होता है। न किसी वस्तु में आसक्त होता है, वह किसी अन्य वस्तु के प्रति उसकी कोई इच्छा रहती है और आनन्द के साक्षात्कार से मस्त रहता है और इस प्रकार के विषयों से निरपेक्ष हो भक्ति का आश्रय लेता है।

भागवतकार ने भक्ति के लिए — सर्वश्रेष्ठ पारिभाषिक भक्ति को अनुराग के रूप में भक्ति को लिया है — "अनुराग भगवान की कृपा में भक्ति है जिसके द्वारा भगवान भी किसी प्रकार की कामना भक्ति भी ऐसी जिसमें किसी प्रकार का स्वार्थ नहीं रहे ऐसी भक्ति भी हो और जो बिना निरन्तर बनी रहे ऐसी भगवान की उपलब्धि भक्ति से तत्काल आनन्द स्वरूप हो जाता है"।

महाप्रभु वल्लभाचार्य ने भक्ति की परिभाषा इस प्रकार की है — "भगवान में माहात्म्यपूर्वक सुदृढ़ और सतत स्नेह ही भक्ति है, मुक्ति का इससे सरल उपाय नहीं है"। भक्ति के दो पक्षों पर विशेष जोर दिया गया है — 1. ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम तथा 2. अन्य सांसारिक वस्तुओं से वैराग्य। श्रीमद् भागवत में इन्हें भक्ति के तीन स्वरूप मिलते हैं
1. विशुद्ध भक्ति 2. नवधा भक्ति 3. प्रेमाभक्ति

श्रीमद् भागवत में विशुद्ध भक्ति का विवेचन कई स्थानों पर हुआ है। एकादश स्कन्ध के चौदहवें अध्याय में भक्ति को योग, ज्ञान, धर्म, स्वाध्याय, तप, दान आदि से भी ऊपर माना है।

भागवत में भक्ति के साध्य और साधन दोनों ही पक्षों का विवेचन हुआ है। मन की एकाग्रता से भगवान का नित्य निरंतर स्मरण, कीर्तन आदि भक्ति का साधन पक्ष है और भगवान में अनुरक्ति उसका साध्य पक्ष है। साधन रूपा भक्ति को नवधा भक्ति, वैधी भक्ति अथवा गौणी भक्ति भी कहते हैं और साध्य रूपा भक्ति को प्रेमा भक्ति तथा रागानुगा भक्ति अथवा रागात्मिका भक्ति के नाम से अभिहित किया जाता है। श्रीमद् भागवत के तृतीय स्कन्ध में भक्ति के चार भेद माने गए हैं — सात्विकी, राजसी, तामसी और निर्गुणा। नारद-भक्तिसूत्र में प्रेम रूपा भक्ति के सम्बन्ध में ग्यारह आसक्तियाँ —

1. गुण माहात्म्यासक्ति
2. रूपासक्ति 3. पूजासक्ति 4. स्मरणासक्ति
5. दास्यासक्ति 6. सख्यासक्ति 7. कान्तासक्ति
8. वात्सल्यासक्ति 9. आत्मनिवेदनासक्ति
10. तन्मयतासक्ति 11. परमविरहासक्ति।

सूरदास के काव्य में इन्हीं सभी प्रकार की भक्ति के दर्शन होते हैं। भागवतकार ने वैधी भक्ति को साधनाभक्ति या प्रेमलक्षणा भक्ति की प्राप्ति का साधन माना है अर्थात भक्ति को सर्वोपरि मानते हुए ज्ञान और कर्म को गौण बताया है। सूरदास ने भागवतकार की भाँति ज्ञान और कर्म को न्यून ही महत्व दिया।

सूरकृत भक्ति निम्नलिखित रूपों में अभिव्यक्त होता है —

(क) साधारण भक्ति विवेचन — इसमें भक्ति के स्वरूप और उसकी महत्ता का वर्णन है।

(ख) वैराग्यपूर्ण भक्ति — भक्ति का वैराग्य बढ़ाने हेतु निर्गुण पंथियों के समान है। यहीं सम्भवतः वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित होने के पूर्व [illegible] या वैधी भक्ति।

(ग) प्रेम रूपा भक्ति है पुष्टि मार्गीय भक्ति।

सूरदास ने सन्त कवियों की भाँति जाति-पाँति का भी विरोध किया है भक्ति के मार्ग पर सभी एक कोटि के हैं। सन्तों का " जाति-पाँति पूछे नहिं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई" वाला सिद्धांत सूर स्वीकार है। सूर के प्रभु के यहाँ सब बराबर हैं।

इनके दरबार में जाति पाँति का भेद नहीं।
" जाति-पाँति कोउ पूछत नाहीं, श्रीपति के दरबार "
भगवान के भजन और भक्ति जाति को पूछ कर पूछत कर लेता है। इनके मतों के भक्ति की जिनकी नहीं की जाती। मधुरता का भाव कृपालु सारे साधन, उपाय, भक्त में व और उपासना नहीं है केवल कृष्ण की चाहती बात होती है अतः उनकी भी आराधना सर्वोत्तम

करी भावना की सरल होई
जो आपनो भुजबल से भगवत, भक्ति सुखों है सोई।
साधना में न जैसे उत्तम कल यो सब उठी भोई

भागवत भक्ति के बिना, बलिता, कुलीनता, और आदि वैभव व्यर्थ है।

वैराग्यपूर्ण भक्ति के विषय में तीसरी उल्लेखनीय बात यह है कि सूरदास ने सन्त मत के तत्वों को भी अपनाया है। इन पदों में स्पष्ट संकेत मिलते हैं —

— चकई री चलि चरन सरोवर जहाँ न प्रेम वियोग

सूरदास ने वस्तुतः नवधा भक्ति को साधना कहा है और प्रेम लक्षणा भक्ति को उसका साध्य माना है। यही कारण है कि सूर ने प्रायः हर प्रकार की भक्ति का वर्णन बहुत संक्षेप में किया है — दास्य, सख्य और आत्म निवेदन का सम्बन्ध मन से है।

प्रेम लक्षणा भक्ति — माधुर्य भाव की भक्ति है और गोपियाँ उसका प्रतिनिधित्व करती हैं। सूर ने प्रेम भक्ति की अभिव्यक्ति नवधा भक्ति द्वारा की मानी है। इस सम्बन्ध में सूरसागर में अनेक पद मिलते हैं —

" प्रेम भक्ति बिनु मुक्ति न होई नाथ। कृपा करि दीजै सोई
और सकल सब देखौ जाइ, तुम्हारो भक्ति होई सोई "

प्रेम भक्ति की प्राप्ति के मुख्य साधन दो हैं — सत्संग और हरि कृपा। सूरदास ने स्थान-स्थान पर इन दोनों साधनों पर बल दिया है। सूरदास की भक्ति भावना के विषय में डॉ. हरवंश लाल शर्मा का यह निष्कर्ष बहुत ही महत्वपूर्ण है कि — " वल्लभ के मिलन के पहले उनका मन स्थिर नहीं था और वह विघ्न यह सिखलाते थे। उनके भक्ति-विवेचन

में इन्होंने निश्चित रूप से अन्तर प्रतीत होता है। निर्गुण पंथ के प्रति शास्त्र में गयी का निष्ठुरता, उदासीनता में परिणित होती हुई भ्रमरगीत प्रसंग में पुष्टि विरोध के रूप में प्रकट निकली होगी।

विवेचन करते हुए सूर की भक्ति के सम्बन्ध में माधुर्य भक्ति पर भी कुछ प्रकाश डालना उचित प्रतीत होता है। सूर के समकालीन रूप गोस्वामी ने "उज्ज्वल नीलमणि" नामक ग्रन्थ में भक्ति का विशद विवेचन किया है। माधुर्य भाव की भक्ति शृंगार प्रेम की भक्ति कही जा सकती है, क्योंकि प्रेम के जितने स्वरूप हो सकते हैं, वे सभी माधुर्य भक्ति में आ जाते हैं।

सूर उच्च कोटि के भक्त थे। उनकी भक्ति अन्तःकरण की प्रेरणा और अन्तर की अनुभूति थी। भक्त होने के साथ-साथ वे कवि भी थे। उनकी भक्ति में कवि-सुलभ कल्पना का योग स्वभाव से ही हो गया है। विनोदी प्रकृति के होने के कारण हास्य और व्यंग्य का पुट भी उनके भक्ति सम्बन्धी पदों में आ गया है। संगीत के प्रकाण्ड पंडित होने से राग, स्वर, ताल आदि की योजना से उनके पदों को रोचकता प्रदान की।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर सूरदास की भक्ति पद्धति से सम्बन्धित निम्नलिखित निष्कर्ष हमारे सम्मुख आते हैं—

1. सूर उच्च कोटि के भक्त थे। उनकी भक्ति अन्तःकरण की प्रेरणा और हार्दिक अनुभूति थी। वह उनकी रग-रग में समाई हुई थी। भक्ति के बिना जीवन व्यर्थ है—

रे मन मूरख जनम गंवायो।
करि अभिमान विषय रस गीध्यो, स्याम सरन नहिं आयो।

2. सूरदास ने पुष्टि मार्ग में दीक्षित होकर आचार्य जी जिस भक्ति पद्धति का अनुसरण किया वह वल्लभ सम्प्रदाय में रागा कोटि की अनुराग भक्ति कही जाती है।

3. सूरदास ने नवधा भक्ति के सभी रूपों का वर्णन किया है। फिर भी प्रमुख रूप से सख्य भक्ति, वात्सल्य भक्ति और माधुर्य भक्ति को ही ग्रहण किया है।

Scanned with CamScanner